तीसरा अध्याय

नारी जीवन की मुख्य समस्यायें : आकलन

आदिम काल से लेकर उत्तराधुनिक काल तक सभी परिस्थितियों में, जिन्दगी भर पुरूष का साथी बनकर, उसके पथ को सरल बनाकर, उसके अभिशापों और आक्रोशों को स्वयं चुप चाप झेलकर, उसकी पराजय में अक्षय शक्ति प्रदान कर और अपने वरदानों से जिन्दगी में शांती भरकर मानवी जिस व्यक्तित्व चेतना और हृदय का विकास कर रही हैं उसी का पर्याय नारी है।संक्षेप में कहा जा सकता है कि वह परिवार की मूल इकाई है। पुरूष ने अपनी सकल प्रभुसत्ता केलिए स्त्री को खतरा माना और उसकी सत्ता को घर की चार-दीवारी में जकड़ दिया गया।औरत ने कभी स्वतंत्र रूप से अपना संगठन नहीं बनाया, कभी स्वयं को स्वतंत्र जाति के रूप में नहीं देखा, न ही कोई उसका जातीय इतिहास ही रचा गया।चाहे राजनीतिक क्रान्ति हो चाहे अर्थक्रान्ति हो चाहे सामाजिक शोषण के खिलाफ संघर्ष की भूमिका हो स्त्री की स्थिति सदा नगण्य रही।"[1]

नारी के विभिन्न रूप

जीवन में नारी कितने सारे रूपों में प्रकट होती हैं। बेटी, बहन, प्रेमिका, पत्नी, बहू, मां, विधवा, परित्यक्ता, वेश्या आदि इनमें से कुछ हैं।पहले वह एक गुणवान बेटी बनकर अपने माता -पिता के हर काम में सहयोग देती है । उसके कुल की मर्यादा की रक्षा करने के लिए बेटी अपने जीवन की समस्त खुशियों को बलिदान करती है।पाचीन भारतीय समाज में बेटी का जन्म अभिशाप ही मानी जाती थी।क्योंकि वह जन्म लेते समय सभी संबन्धियों को दुख देती है, कभी कभी यौवन काल में कुल को कलंकित करती है और शादी के समय बहूत-सा धन लेकर सभी रिश्तों को छोड़कर किसी भी अपरिचित व्यक्ति के साथ चल जाती है

नारी का दूसरा रूप है बहन का। बहन के रूप में वह भाई के सफल जीवन की कामना करती रहती है।लेकिन कभी-कभी बहन को ठीक तरह से समझने में वह असफल हो जाता है ।इसलिए भाई-बहन के अमर प्रेम को जिंदा रखने के लिए प्राचीन काल से ही भारतीय

---

1 मधुमती: फरवरी 1996, पृ. 78

संस्कृती में 'रक्षा बंधन' और 'भैयादूज' जैसे त्योहार मनाए जाते हैं।भाई-बहन के बीच का प्यार बढ़े और उस रिश्ते में गहराई आए प्रस्तुत उददश्य से ही ये त्योहार मनाये जाते हैं।

नारी का तीसरा रूप है आदर्श पत्नी का।वह अपना घर छोड़कर दूसरे घर जब आती है तब त्याग और बलिदान की मूर्ती बनकर सबका प्रेम जीतने का प्रयत्न करती है।वह ससुराल के हर सदस्यों की तथा उनके मित्रों की निरंतर सेवा करती है ।प्रत्येक परिस्थिति में अपने जीवन साथी के साथ सारा जीवन बिताने का वादा कर पत्नी के रूप में वह पति के हर एक सुख दुख में भागीदार बन जाती है।माता पिता द्वारा चुने गये उस व्यक्ति पर-जिसे वह जानती तक नहीं-विश्वास करके उसे अपने जीवन की बागडोर सौंप देती है। अपने घर के लिए, परिवार के लिए नारी अपना सब कुछा न्योच्छावर कर देती है। पूरी जिन्दगी की कमाई घर को बनाने में लगा देती है ।अन्न व वस्तु प्राप्ती के बदले आदर्श पत्नी अपने स्वास्थ्य, मुक्ती और सदाचार को पुरूषों केलिए सदैव अर्पित कर देती है।

नारी का पॉचवॉ रूप है मॉ का जिसे हम ममता की मूरत कहते हैं।वह ममता की खान है।प्राचीन भारतीय मान्यता के अनुसार माता को गुरू तथा पिता से ऊँचा स्थान है तथा उसकी पूजा और उपासना भी करना है।मॉ बनने की इच्छा हर नारी में होती है।साधरणतः नारियॉ मॉ बनकर अपने जीवन को सार्थक समझती हैं।

वैवाहिक जीवन का एक मुख्य उददेश्य कुल को आगे बढाना होता है।जब नारी इसमें असफल होती है उसे समाज से तिरस्कार ही मिलता है।आधुनिक युग में भी स्त्री का वन्ध्या होना अपमानजनक कार्य समझा जाता है।

भारतीय समाज में विधवा होने की स्थिति को नारी के लिए अभिशाप मानने की परंपरा चली आयी है।घर के बाकी सदस्यों द्वारा अवमानना और तिरस्कार को नियती मानकर झेलनी पड़ी है।अधिकॉश विधवाएँ, वैधव्य संबन्धी सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार कर परिवार की चहारदीवारी में बंधनपूर्ण जिन्दगी जीने के लिए मज़बूर हो जाती है।विधवा पर समाज द्वारा आचार-विचार तथा वेश-भूषा में भी बन्धन डाला जाता है।पति की मृत्यु के बाद परिवार में तिरस्कार और भर्त्सना सहकर जीने का मुख्य कारण विधवा का आर्थिक परावलंबन है।

वेश्या का पारिवारिक जीवन से सीधा संबन्ध नहीं है।वह समाज का कलंकित रूप है। कुछ स्त्रियाँ सिर्फ भूख, प्यास को मिटाने के लिए वेश्या रूप धारण करती है तो कुछ स्त्रियाँ आडंबरपूर्ण जीवन बिताने केलिए वेश्या जीवन द्वारा पैसे कमाती है। पुरूष की वासना की पूर्ती करके आर्थिक लाभ उठाना वेश्या का मुख्य लक्ष्य होता है। इन्हें समाज में स्वकृिति नहीं मिलती है। कालांतर में इनके रूप-यौवन, मान-सम्मान सब नष्ट हो जाते हैं और जिन्दगी भी वीरान हो जाती है।

स्त्री कितने आगे बढना चाहती है स्वार्थी और विरोधी पुरूष लोग उसे अपमानित कर पीछे हटाने का कुटिल श्रम भी करत हैं।"यह सच है कि परिवर्तित सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा रोज़गार के अवसरों और समानता के अधिकारों में काफी वृद्धि हुई है किन्तु फिर भी प्रतिगामी नैतिकताओंमान्यताओं. मूल्यों और सामाजिक मानसिकता के कारण अनेक विसंगतियों ने नारी जीवन पर दोहरे मानदण्डों को लागू किया हुआ है।एक भयंकर सामाजिक रोग की भाँति कानून और अंधविश्वासों के दोहरे शिकंजों ने नारी मन को आहत भी किया है और विद्रोही भी बनाया है।व्यक्ति द्वारा स्वयं एक आत्मिक सत्ता के रूप में अपनी चेतना की स्थापना और नैतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण की प्रजातांत्रिक आधारभूमि पर स्थापना करने की प्रवृत्ति व्यक्तिवादी भावाभिव्यक्ति की विशेषताएँ कही जा सकती हैं"।[2]

नारी जीवन की मुख्य समस्यायें

प्राचीन समय से आज तक सुनती आ रही है कि नारी तुम कोमलकाया हो, तुम पूजनीय हो, तुम ममतामयी हो और तुममें त्याग की अपार क्षमता हो।लेकिन वास्तव में भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परिवेश में नारी एक शोषित इकाई है।हमारे समाज में एक ओर नारी की महत्ता की स्वीकृति होती है तो दूसरी ओर उसका आर्थिक और लैंगिक शोषण ज़ोरों पर चलता है।यह स्थिति हमारे सांस्कृतिक दोगलेपन को प्रकट करती है।सामाजिक नियमों तथा नैतिक मान्यताओं का अंकुश स्त्री पर सदैव लगा रहता है जिसका उल्लंघन करने से उसे

---

2 मधुमती ः फरवरी ,**1996** पृ . **80**

समाज और परिवार से निष्कासित किये जाने का भय सताने के कारण सभी पीडाओं को वह चुपचाप सहन करती है। गन्दे मज़ाक, उपहास, द्विअर्थी टिप्पणियॉं, मौका देखकर अनुचित स्पर्श चेष्टा पुरूषों के इसप्रकार के दुर्व्यवहार सभी औरतों को झेलनी पडती हैं। "शारीरिक दृष्टि से कमजोर होने तथा उसे उपभोग की वस्तु के रूप में मानने के कारण स्त्री पर कई अत्याचार होने लगे।" [3]

जीवन साथी केलिए सब कुछ न्यौछावर करने पर भी अपनी इच्छा की पूर्ति केलिए उसे अपने पती की मरजी जाननी पड़ती है।उसकी मंजूरी लेनी पडती है ।शिक्षित और नौकरीपेशा नारी को भी पुरूष के अहं को झेलनी पड़ती है।कार्यक्षेत्र में सफल सिद्ध करने पर भी समाज के सामन्ती दृष्टिकोण के कारण नारी को समाज और घर में पुरूष से दो कदम पीछे स्थान मिलता है। "ज्यादात्तर परिवारों में शुरू से ही स्त्री-पुरूष केलिए दो अलग-अलग प्रतिमान निर्धा रित होते हैं और लड़की को बराबर यह अहसास कराया जाता है कि वह लड़की हैं, दूसरे-तीसरे दर्जे की नागरिक।" [4]

बुद्धि, कियाशेषी तथा अस्मिता द्वारा स्त्री कितने आगे बढ़ना चाहती है स्वार्थी और विरोधी पुरूष लोग, उसे अपमानित करके पीछे हटाकर घर की चहारदीवारी के भीतर बन्धी बनाने का श्रम करता है। "नारी ने कदम-कदम पर स्वयं को हर क्षेत्र केलिए कुशल सिद्ध किया है वह मात्र देह नहीं, बुद्धी भी है।शारीरिक, मानसिक संतुलन की सुन्दर कियान्विति भी है ।किन्तु आज भी समाज का सामन्ती दृष्टिकोण उसे यौनशुचिता और नैतिकता के नाम पर अपमानित करके उसकी कियाशक्ति को घर की चारदीवारी में कैद करना चाहता है।" [5]

---

3 दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, सितंबर- **2004.** पृ .11

4 हिन्दी कहानी का समकालीन परिदृश्य :डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ,पृ. **51** ।

5 मधुमती ः फरवरी **1996,** पृ. **79**

भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति एवं समस्याओं के अनेक स्वरूप हैं जिनका सामान्यीकरण कर पाना असंभव है।फिर भी नारी जीवन की मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालने की कोशिश यहाँ कर रही हूँ।नारी जीवन की समस्याओं को मुख्य रूप में दो स्तर पर विभाजित किया जा सकता है -पारिवारिक समस्यायें और कामकाजी नारी की समस्यायें।

पारिवारिक समस्यायें

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक आते-आते इस विशाल देश के विभिन्न क्षेत्रों, नगरों एवं ग्रामीण परिवेश में विभिन्न वर्गों, धर्मों, जाति समूहों में बँटी नारी को अलग अलग चुनौतियों से जूझना पड़ा है।घर में वह केवल पति की छाया मात्र बन जाती है, पति की इच्छाओं के पालक है और आज्ञाधारक भी है। "आज भी स्त्रियों की स्थिति घरों में दोयम दर्जे की है।शहरों के अलावा गांवों और सुदूर के क्षेत्रों में आज भी वे दोयम दर्जे की नागरिक हैं।आज भी भारतीय समाज के एक बृहद परिप्रेक्ष्य में घर में स्त्रियों को महारानी, रानी और भी कई प्रिय संबोधनों से संबोधित तो किया जाता है लेकिन काम सारे नौकरानियों जैसे लिए जाते हैं।"[6]

पारिवारिक समस्यायें मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं -व्यक्तिगत प्रश्न और सामूहिक प्रश्न । कुछ व्यक्तिगत प्रश्न आगे चलकर सामाजिक प्रश्न का रूप धारण करते हैं।

परिवार के भीतर नारी जीवन से संबन्धित समस्याओं को निम्नांकित रूप में अंकित कर सकते हैं - अविवाहिता नारी की समस्या, नारी के अकेलेपन की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, कलंकिता नारी की समस्या, अवैद्य मातृत्व की समस्या, दहेज पीड़ित नारी की समस्या, पत्नी रूप में नारी जीवन की समस्यायें, विधवा की समस्यायें, माता के रूप में नारी जीवन की समस्यायें, परित्यक्ता नारी की समस्यायें, विवाह विच्छेद की समस्या, तलाक समस्या, समाज की बुरी आदतें, घर के बाहर की समस्या आदि। इसके अलावा परिजनों

---

6 आजकल ः मार्च **2008,** पृ . **31**

द्वारा उपेक्षित हो जाना, आर्थिक विषमता, भ्रष्ट शासन व्यवस्था, अंर्तजातीय विवाह, बिखरता हुआ दाम्पत्य, टूटा हुआ दाम्पत्य, परिजनों की स्वार्थवृत्ति, अनात्मीयता की समस्या, पीढी अंतराल की समस्या और टूटता-जूड़ता दाम्पत्य आदि भी नारी जीवन की मुख्य समस्यायें हैं। "नारी जीवन के संघर्ष के अनेक आयाम हैं।परिवार उसकी अनिवार्यता है और स्वाभिमान उसकी आवश्यकता।किन्तु पारिवारिक संदर्भों में उसकी स्थिति अनेक रिश्तों और रूपों में बॅटकर उस पर अनेक प्रकार के मानसिक दबाव डालती है।" [7] उत्तराधुनिक युग में भी, विवाहपूर्व काल में पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण नारियॉं कुंठा, तनाव, द्वंद्व आदि की शिकार बन जाती हैं।यदि वह कामकाजी है, परिवार में आय भी सीमित है, तब घर के अन्य लोग निर्दयता से उसका रस चूसते है। अविवाहित स्त्रियों को विवाह पूर्व यौन संबन्धों को दबाना भी पड़ता है।कभी-कभी विवाहपूर्व प्रेम संबन्ध के कारण उन्हें अपने ही परिवार में यातनाएॅं भोगनी पड़ती है। नारी -पुरूष के विवाह पूर्व यौवन संबन्धों में भाग लेना भारत में नैतिक नहीं माना जाता है। जब कोई अविवाहित नारी भारतीय मान्यता को चुनौती करके मातृत्व प्राप्त करती है तब समाज के सामने वह एक भीषण समस्या के रूप में उपस्थित होती है। अविवाहित नारी की संतान, विधवा नारी तथा विवहित नारी की पर पुत्ष से उत्पन्न संतान और वेश्या या वेश्या कन्या से उत्पन्न संतान अवैध संतान मानी जाती हैं ।अवैध संतान का पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, विवाह और उसकी माता को समाज में सम्मानित स्थान इत्यादि के बारे में जटिल समस्यायें उत्पन्न होती हैं ।

आज भी स्त्री शिक्षा में प्रशंसनीय परिवर्तन नहीं हुआ है।मुस्लिम विभागों में महिलाओं की शिक्षा में अब भी उदासीनता दिखाई पड़ती है। "मुस्लि-समाज में स्त्री-शिक्षा का निषेध रहा है।अगर स्त्री शिक्षित भी है तो घरवाले उसके नौकरी करने के विरोधी हो जाते हैं।"[8] गरीबी, अज्ञान, घर के काम, बाल विवाह पद्धती, कॅपिटैशन फीस, स्त्री के प्रति आज भी होनेवाली दोहरी मानसिकता आदि कारणों से स्त्री शिक्षा की समस्यायें बढ़ती रहती हैं।लड़की

---

[7] मधुमती ः फरवरी **1996**, पृ. **81**

8 अभिनव प्रसंगवश,जनवरी- मार्च **2007**. पृ.**47**

सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित और नौकरीपेशा होने पर भी शादी के बाज़ार में उसके इन गुणों का कोई स्थान नहीं मिलता है। वर अनपढ़ हो, कुरूप हो या दुराचारी हो तब भी वधु उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य है।कभी–कभी वर पक्ष लड़की को देखने के पहले ही दहेज के रूप में मिले रूपये -पैसे तथा संसारोपयोगी वस्तुओं के मूल्य का आकलन करते है। आज भी दहेज के अभाव में अनेक नारियां अपमानित हो जाती हैं। वधू पक्ष की स्थिति अगर देनेलायक नहीं होती तो भी स्त्री पर जुल्म जबरदस्ती करके इसे प्राप्त करने की त्रुटी उत्तराधुनिक युग में भी दीख पडती है।दहेज के अभाव में विवाह न होने से लड़की के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य बिगडती है। यदि शादी बाहय आकर्षण के आधार पर है तो पति या पत्नी दोनों का परस्पर के चरित्र के प्रति उभरता संशय, पुरूष का हीनता बोध, बेमेल विवाह, पुरूष का शाराबी होना आदि से उत्पन्न समस्यायें वैवाहिक जीवन में स्त्री को सहना पड़ता है।कभी कभी नारी को घर गृहस्ती का बोझ अकेले अपने ही कन्धों पर ढ़ोना पडता है यद्यपि पति को त्यागने और परिवर्तन की बात सोचना भी उनकेलिए पाप है।

विधवा होने पर समाज नारी को तिरस्कृत नज़रों से देखता है।समाज द्वारा उसके खान-पान, रंगीन परिधान, घूमने-फिरने तथा आचार-विचार पर भी कई तरह के बन्धन डाले जाते हैं।वह पराश्रिता भी बन जाती है।भारतीय मान्यता के अनुसार विधवा का मुँह देखना अशुभ सूचक कार्य माना जाता है।हताश एवं पराधीनता बोध से विधवा लोग पीड़ित हैं।

बांझ नारी असहायता, अकेलापन, अवमानना तथा दुश्चिंता से पीड़ित है।अपने वंध्यत्व के कारण वे परिजनों द्वारा तिरस्कृत, परित्यक्ता एवं बहिष्कृत हो जाती हैं।हमारे समाज में वंध्या होना आज भी अपमानजनक बात है।कभी-कभी वह समाज के बर्ताव के सामने थककर हार जाती है और अपने हृदय की प्रिय इच्छाएँ कुचलकर शव के समान जड़ बनकर रहने को भी विवश हो जाती है।

कोई स्त्री पैसे कमाने केलिए जब अपने शरीर का विक्रय करती है तब उसे वेश्या कहती है।वेश्या का अर्थ है एक से अधिक पुरूषों के साथ शरीर संबन्ध रखनेवाली स्त्री।समाज

में इसकी स्वीकृति नहीं होती।लोकलाज के भय उसे सदा सताती है।पतिव्रता की परिकल्पना से ओतप्रोत भारतीय नारियां स्वयं वेश्या बनने केलिए तैयार नहीं हो जाती है।कुछ स्त्रियॉं आर्थिक दृष्टि से संपन्न होने के लिए वेश्या जीवन में प्रवेश कर जाती है।

आज भी नारी की जिन्दगी ख़तरे में है।स्त्रियों को चारों ओर की व्यवस्थायें बन्दी बनाती हैं। अपने हित-अहित के अनुसार वह कुछ नहीं कर सकती। उसकी इच्छा-अनिच्छा का समाज और परिवार में कोई स्थान नहीं है।पुरूष अच्छा हो या बुरा, नारी को स्वीकार करना ही पड़ता है।

विवाह विच्छेद या तलाक की समस्या आज के युग की एक प्रमुख समस्या बन रही है।तलाक के पूर्व और पश्चात नारी को ही अधिक तनाव झेलना पड़ता है।तलाक की लंबी कारवाइयों से गुज़रते हुए वह बेहद मानसिक पीड़ा की शिकार बन जाती है।

नारी शिक्षा के प्रचार के परिणामस्वरूप परंपराओं से तिरस्कृत नारी के प्रति दृष्टिकोण तथा नारी का दृष्टिकोण दोनों बदलने लगे।ऐसे माहौल में नारी वर्ग में भी नये जीवन के प्रति महत्वाकांक्षा मजबूत होने लगी। नवीन उपलब्ध स्वातंत्र्य भावना ने नारी को अपनी अस्मिता को पहचानने की शक्ति दी।फलस्वरूप नारियों में अपने स्व के प्रति गहरी आस्था जन्म लेने लगी।नारी की इस बदलती मानसिकता के बारे में कमलेश्वर लिखते है कि आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा देह संपदा और वास्तविक सम्मान के साथ आयी है।

आज की सुशिक्षित स्त्री अपने पूरे व्यक्तित्व के साथ मौजूद दिखाई देती है। आधुनिक स्त्री नर-नारी समता में विश्वास करती है जहॉं पुरूषों से वह किसी मायने में कम नहीं है। लेकिन मुस्लिम समाज में आज भी पुरूषों की मानसिकता काफी नहीं बदली है।प्रस्तुत समाज में अनेक रूढ़ियॉं और अन्धविश्वास व्याप्त हैं। मुस्लिम स्त्रियॉं अधिक धर्मभीरू भी होती हैं। पुरूष आज भी स्त्रियों को वस्तु रूप में समझता है और स्त्रियॉं इस प्रदत्त स्थिति को स्वीकार भी कर लेती है। "मुस्लिम समाज की नारियॉं हमेशा से पुरूषों के हाथों प्रतांड़ित होती रही

हैं।शरीअत, हदीस का भरपूर फायदा उठाकर, पूरूष औरत पर मनचाहा हुक्म चलाता रहता है और उसके हुक्म को मानना उसकी मजबूरी बन जाती है।" [9]

कामकाजी नारी की समस्यायें

कुछ विद्वानों द्वारा कामकाजी महिला से प्रायः यह अर्थ लिया जाता है कि वह घर के बाहर जाकर नौकरी करती है या उन महिलाओं को कामकाजी संज्ञा के अन्तरगत रखा जाता है,जिनका श्रम प्रकट रूप से अर्थोत्पादन में लगा हुआ है। अर्थोपार्जन करनेवाली महिलाएँ ही कामकाजी महिलाएँ हैं । वेश्यावृत्ति से भी धनोपार्जन होता है परन्तु वेश्या को कामकाजी महिला की श्रेणी में नहीं रखा जाता।

डॉ. रोहिणी अग्रवाल के मतानुसार "महिला के कामकाजी होने के लिए दो बातें विशेष रूप से अनिवार्य हैं एक तो उसका कार्य पति अथवा परिवार के सदस्यों से स्पष्ट रूप से या तो पृथक हो या पृथक मान्यता प्राप्त हो दूसरे उसे अपने श्रम का प्रतिदान मिले।उल्लेखनीय है कि पति के साथ साथ ईंट गारा ढोनेवालै स्त्री मज़दूरों को इसी अर्थ में कामकाजी माना जता है।"[10] डॉ. अनिल गोयल ने 'दफ्तरों में काम करनेवाली शिक्षित महिलाओं को कामकाजी"[11] माना है। डॉ .मोहम्मद अज़हर ढेरीवाला की राय में 'अर्थोपार्जन करनेवाली महिलाएँ ही कामकाजी महिलाएँ हैं"[12]

शिक्षित नारी समझती है कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना अपनी स्वतंत्रता तथा अस्मिता केवल सिद्धांत ही रह जाती है। इसलिए आधुनिक नारी कामकाजी बनना पसंद करती

---

9 अभिनव प्रसंगवश , जनवरी- मार्च 2007. पृ. 44]

10 हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिला ः डॉ. रोहिणी अग्रवाल, पृ. 55।

11 हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका ः शॅ. अनिल गोयल, पृ. 173।

12 आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण :डॉ. मोहम्मद अज़र ढेरीवाला, पृ. 208

है। "आर्थिक स्वतंत्रता के अभााव में स्त्री की स्वतंत्रता सिर्फ अमूर्त और सैद्धांतिक रह जाती है।" [13] आज नारी स्वाभिमान की भावना के कारण दूसरों के सामने हाथ न फैलाकर नौकरी के क्षेत्र में खुद ही प्रवेश करती है ।परिणामस्वरूप आर्थिक क्षेत्र में स्वतंत्रता का अनुभव करती है। निम्न वर्ग या निम्न मध्यवर्ग की स्त्रियों की अपेक्षा यह स्थिति मध्यवर्ग की नारियों में अधिक मात्रा में देखी जाती है। "शिक्षा से प्राप्त स्वाभिमान की भावना के कारण स्त्री पराश्रित न होकर नौकरी के क्षेत्र में प्रवेश करती है और आर्थिक रूप से स्वतंत्रता का अनुभव करती है।यह स्थिति मध्य वर्ग की नारियों में देखी जाती है।" [14]

इसके अलावा बढती हुई आर्थिक समस्याओं के कारण स्त्री के कन्धों पर भी पुरूष के समान ही दायित्व का बोझ आ पड़ा है। पर उच्चमध्यवर्गीय नौकरीपेशा नारियों का स्वरूप कुछ भिन्न है। प्रस्तुत वर्ग की नारियां अहं की भावना और स्ववलंबन की इच्छा को तृप्त करने केल्लिए, टाइम पास केलिए, अपनी बोरियत को दूर करने केलिए तथा सौन्दर्य सामान खरीदने केलिए नौकरी करना चाहती है।

बढ़ती हुई महंगाई से मुक्ति पाने केलिए तथा भौतिक सुख समृद्धि को बढ़ाने केलिए अब विवहित महिलाएँ भी नौकरी करने केलिए तैयार हो जाती हैं।इसके अलावा आजकल नौकरी, को विवाह केलिए एक अतिरिक्त योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाता है। शिक्षा के बल पर महिलाएँ अध्यापक वर्ग, स्टेनो, टाइपिस्ट, क्लर्क, सेकेटरी, डॉक्टर, नर्स, इंजीनियर, उपकुलपति, राष्ट्रपति जैसे नानाविध पदों पर पहूँच जाती हैं।निम्नवर्ग निम्नमध्यवर्ग तथा मध्यवर्ग की शिक्षित स्त्रियों को कई बार अर्थिक विवशताओं से वशीभूत होकर नौकरी करनी पड़ती हैं। आधुनिक नारी अपने दायित्वों के प्रति शायद पुरूषों से भी अधिक सतर्क है क्योंकि एकसाथ ही

---

13 आजकल ः मार्च **2008,** पृ. **30**

14 हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी के बदलते स्वरूप **:** डा. सुधा बालकृष्णन, पृ. **126**

उसे घर और दफ्तर की जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है। नारी के कष्टपूर्ण जीवन केलिए पूरा समाज जिम्मेदार है।

डॉ. विजया वांरद द्वारा लिखित 'साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ' शीर्षक ग्रन्थ में इस देश की शिक्षित स्त्री कामकाजी बनने के मूल में निम्नलिखित कारण दिये गये हैं

1 देश विभाजन और उससे सीमावर्ती परिवारों के आर्थिक आधार खत्म हो जाना परिणामस्वरूप स्त्री का मजबूरी से कामकाजी बनना।

2 संयुक्त परिवारों का टूटना, छोटे परिवार, सीमित आय और आर्थिक मजबूरियों के कारण स्त्री का कामकाजी बनना।

3 शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण भी यह स्थिति आ गयी।

4 जीवन की नई आर्थिक चुनौतियों के कारण भी उसे नौकरी पर जाना पड़ा।

5 संविधान के कारण स्त्री को समान अधिकार प्राप्त हो गये।इस कारण उपलब्ध अवसर विभिन्न विकास योजनाएँ और उसके लिए आवश्यक सेवाओं के कारण भी स्त्री को बाहर जाना पड़ा।

6 उच्च शिक्षा की प्राप्ति-शिक्षा के बाद उत्पन्न खालीपन को काटने के लिए नौकरी की ओर मुड़ना।

7 बाल विवह की समाप्ति-देरी से विवाह की पद्धति परिणास्वरूप विवाह होने तक नौकरी की ओर मुड़ना।

8 बदलती अर्थव्यवस्था के कारण विवाह में दहेज का महत्व बढता जाना।

अ. दहेज की राशि इकटठा करने केलिए नौकरी की ओर मुड़ना।

आ. दहेज नहीं दे पा रहे हैं।इसलिए नौकरी करना।

इ. विवाह नहीं हो रहा है इसलिए नौकरी करना।

9 किसी प्रसिद्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति से विवाह हो जाना और पति की प्रतिष्ठा के कारण सहजता से नौकरी मिल रही है इसलिए नौकरी करना।

10 बढ़ती हुई भौतिक वस्तुओं के प्रति दोनों में उत्पन्न आकर्षण उन वस्तुओं को सीमित आय में न जुटा पाना और इसलिए दोनों का नौकरी करना।

11 सारे आर्थिक आधार टूट जाने के कारण मजबूरी से नौकरी करना।

अ. पति की मृत्यु के कारण कामकाजी बनना।

आ. माँ या पिता की बीमारी के कारण नौकरी करना।

इ. परिवार की जिम्मदिारियॉ अधिक होने के कारण तथा कमानेवाले बड़ा भाई या पिता न होने के कारण मजबूरी से नौकरी करना।

इन विविध कारणों के अलावा और भी अनेक कारण हो सकते हैं।इन सभी कारणों को तीन स्थूल हिस्सों में बॉटा जा सकता है

1. जीवन की बढ़ती हुई अपेक्षाएँ और इस कारण कामकाजी बन जाना।

2. आर्थिक दृष्टि से पूर्णत : निराधार होने के कारण कामकाजी बन जाना।

3. अपने स्व और व्यक्तित्व के प्रति सजगता के कारण कामकाजी बन जाना।[15]

कामकाजी महिलाओं का वर्गीकरण

कामकाजी महिलाओं का वर्गीकरण करके हम उन्हें निम्नलिखित दो विभागों में विभाजित कर सकते हैं- . ग्रामीण क्षेत्र में कामकरनेवाली महिलाएँ और . नगरीय क्षेत्र में कामकरनेवाली महिलाएँ।

स्वतंत्रता के पहले ग्रामीण क्षेत्र में काम करनेवाली महिलाओं में प्राय: मज़दूरिनें तथा सेविकाएँ होती थीं ।पर आज शिक्षा के प्रचार के कारण ग्रामीण क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं का व्याव्सायिक क्षेत्र भी विस्तृत हो जाता है।शिक्षिकाएँ, ग्राम सेविकाएँ, विभिन्न सरकारी कल्याण योजनाओं में कामकरनेवाली महिलाएँ, खेतिहर, मज़दूरिन, कारख़ानों तथा ख़दानों में कामकरनेवाली महिलाएँ, आस्पताल में नर्स, मिडवाइफ के रूप में कामकरनेवाली

---

15 साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ: डॉ. विजया वारद, पृ. **29-30**।

महिलाएँ, दूकानदारिन के रूप में कामकरनेवाली महिलाएँ आदि ग्रामीण क्षेत्र में काम करनेवाली महिलाएँ हैं।

नगरीय जीवन अपेक्षकृत अधिक खर्चीला होता है।फलत: नगरों में पुरूषों के अतिरिक्त स्त्रियों को भी नौकरी करनी पड़ती है।डाक्टर, कालेज की प्राध्यापिकाएँ, राजनीति में कामकरनेवाली महिलाएँ, माध्यमिक विभाग में कामकरनेवाली महिलाएँ, पत्र पत्रिकाओं में काम करनेवाली महिलाएँ, दफ्तरों में कामकरनेवाली महिलाएँ, नाटक, फिल्म, मोडलिंग, एडवर्टाइज़िंग, मार्के टिंग, टूरिंग आदि में कार्यरत महिलाएँ, बडे बडे व्यवसायों में लगी हुई महिलाएँ, ऐयर होस्टेस ,मुख्यमंत्री, पुलिस कमिश्नर, मेयर, राष्ट्रपति, उपकुलपति, कुलपति आदि अनेक रूपों में आजकल महिलाएँ काम कर रही हैं।

कामकाजी स्त्री के जीवन में विभिन्न स्तरों पर विविध समस्यायें उभरती हैं

1 व्यावहारिक स्तर पर समस्यायें-जहॉ वह काम कर रही है, वहॉ के व्यक्तियों का दुर्व्यवहार और उससे उत्पन्न समस्यायें।

2 पारिवारिक समस्यायें-कामकाजी बनने के कारण पारिवारिक संबन्धों में पति ,पिता, भाई, बहन द्वारा उत्पन्न तनाव अथवा परिवर्तन और उससे उत्पन्न समस्यायें।

कामकाजी महिलाओं को दोहरा दायित्व वहन करना पड़ता है। आजकल लड़कियॉ पढ़ लिखकर नौकरी करने लगी हैं ।फलत: पारिवारिक उत्तदायित्वों को वहन करते-करते कई बार उन्हें अविवाहित रह जाना पड़ता है। "कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिकाओं में भी प्रायः नारी को पब्लिक प्रापर्टी बनाकर घर परिवार बच्चे नैतिकता और संस्कृति की दुहाई देकर पीछे घसीटने की कोशिश की जाती है।महत्वाकांक्षी नारी के प्रति किसी की सहानुभूति नहीं है।" कभी कभी नौकरीपेशा स्त्रियॉ वर्किंग वीमेन्स हास्टल में रहती हैं।उसमें रहनेवाली स्त्रियॉ जो अकेली हैं पर एकाकी नहीं। अपने विवाह की संभावना भी स्वयं तलाश लेगी । लेकिन पुरूषों की बनी बनायी मान्यता है कि हॉस्टल में रहनेवाली लड़कियॉ ठीक नहीं होती, महिला छात्रावास में

क्या नहीं होता, सो टहलाने केलिए वे ठीक पर विवाह के लिए नहीं ।ग्रामीण क्षेत्रों से कामकरने के नाम पर महानगर में आई तमाम स्त्रियों में स्थितिगत विवशता भी है ।

धीरे धीरे इन लड़कियों से घर का नाता मात्र छुटटी भर का रह जाता है ।जब घर जाती है तब मां-बाप तथा छोटे भाई-बहनों को संतुष्ट करने केलिए मन पसंद चीज़ें ख़रीदती है। कभी-कभी बेटा द्वारा उपेक्षित वृद्ध माता पिता का उत्तरदायित्व भी वह ढोती है।

कामकाजी नारी के शोषण में अधिकारी और नौकरशाही दत्तचित्त हैं। स्त्री की देह सदियों से पुरूष की संपत्ती बनी रही है।कभी-कभी ऑफिस में अधिकारी द्वारा स्त्री की देह का बलात उपयोग भी किया जाता है और वह केवल रंजन की वस्तु समझी जाती है।इसके अलावा निजी क्षेत्र के कार्यालयों में काम अधिक होते है लेकिन वेतन इसके समतुल्य नहीं होते हैं।फलस्वरूप आर्थिक विवशता का भी उन्हें सामना करना पड़ता है।उच्च पदाधिकारी स्त्रियॉं कार्यालय में दृढ़ निश्चयी और स्वतंत्र होकर कुशल प्रशासक के रूप में ख्याति प्राप्त करती हैं।लेकिन घर में वह केवल आज्ञाधारिणि है ! "सामाजिक क्षेत्र में भी घर में चूल्हे-चौके की बंदिश कमोवेश जैसे की तैसी है जिससे कामकाजी महिलाओं को भी दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ता है।राजनीति में एक महिला प्रधानमंत्री तथा अनेक महिला मुख्यमंत्रियों के सत्तानशीन होने के बावजूद महिलाओं की स्थिती दोयम दर्जे की ही है।" [16]

आज नारी कितने ही क्षेत्रों में काम करती है।लेकिन उसे सदैव द्वितीय स्थान मिलता है। "पत्रकारिता में स्त्रियॉं दोहरी त्रासदी का शिकार होती हैं।उन्हें एक ख़ास किस्म केख़ॉंचे में ढ़ालने का प्रयास किया जाता है।जब वे उस ख़ॉंचे में नहीं ढ़लतीं तो उन्हें अछूत साबित कर दिया जाता है, जिससे या तो वह छुक जाएँ या इस पेशे से ही तौबा कर लें।" [17]

कामकाजी नारी को विभिन्न प्रकार की पारिवारिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।पति का अविश्वास, घर में आधुनिक सुविधाओं का न होना, न्यूक्लियर से 'मैका'

---

16 अक्षरपव:मार्च **2006**, पृ. **23**

17 नया ज्ञानोदय :फरवरी **2006** पृ. **99**

परिवार होने से बड़ों की सहायता न मिलना, वृद्ध सास-ससुर की निरन्तर सेवा, बच्चों को 'कैच' में रखने की समीपस्थ सुविधा का न होना, स्वास्थ्य संबन्धी सुविधाओं का पूर्ण रूप से न प्राप्त होना आदि।दूसरे परिवार से पतिगृह में आने के कारण अनुकूलन की समस्या भी उत्पन्न होती है। कामकाजी महिला को गृहकार्य के उपरान्त बच्चों की परवरिश, उनकी शिक्षा-दीक्षा, उनके होमवर्क इत्यादि की चिन्ता भी करनी पड़ती है। कामकाजी नारी के दांपत्य जीवन में दरारें पड़ने के कई उदाहरण उपलब्ध होते हैं। "सुबह से शाम तक नौकरी की किट -किट में मर -खप कर जब वह घर लौटती है तो उसे अनेक पारिवारिक दायित्व निभाने पड़ते हैं।पति को लेकर बच्चे तक, माँ - बाप, भाई-बहन, सास-ससुर, ननद-देवर-सभी की उससे अतिरिक्त अपेक्षाएँ, हैं किन्तु उसकी अपेक्षाओं और आकांक्षाओं का ध्यान रखनेवाला विरला ही कोई है।विवाह से पहले नौकरी करती नारी को अपने परिवार केलिए तचना पड़ता है तो विवाह के पश्चात अपने पति के परिवार केलिए, मानो तिल- तिल कर गलकर सबको संतुष्ट करना ही उसकी नियती है।" [18]

नारी को अकेले आगे बढ़ने में बहूत कठिनाई होती है क्योंकि उसे सुरक्षा की जरूरत है।आगे बढाने केलिए उसे पुरूष की जरूरत है। शरीरिक अंतरों के होते हुए भी नारी, नर के समान बन सकती है।दोनों के पास अपने-अपने विशिष्ट गुण हैं।कंधे से कंधे मिलाकर स्नेह से भरकर काम करें तो यह दुनिया अधिक श्रेष्ठ हो जायेगी।

नारी शब्द का अर्थ

"नारी शब्द का अर्थ न + अरी अर्थात जिसका कोई शत्रु न हो ,जेा सबको प्रिय हो।" [19]

अस्मिता का अर्थ

भारतीय समाज मूलतः पुरूष प्रधान समाज है।सामाजिक और पारिवारिक जीवन का केन्द्रबिन्दु पुरूष ही है।सदियों से पुरूष स्त्री पर शासन करता है।पुरूष प्राय: नारी के

---

18 समकालीन कहानी रचना- मुद्रा : डा.पुष्पपाल सिंहः, पृ.70,

19 नागरी पत्रिका : 15जून2006-14 जुलाई 2006पृ.10

व्यक्तित्व तथा नारीत्व को गौण स्थान देकर उसे केवल संपत्ती मानता है। उससे पुरूष के प्रति नारी की समर्पण भावना अन्धभक्ति की सीमा तक बढ़ जाती है। हमेशा पुरूष पर आश्रित बने रहने की अपेक्षा नारी से की जाती है। यान्त्रिकता के बढ़ते हुए कदमों ने वैचारिक भावभूमि में भी परिवर्तन ला दिये हैं। पुरूष ने अपनी सकल प्रभुसत्ता केलिए स्त्री को बाधा माना और इसलिए उसकी सत्ता को घर की चार दीवारी में जकड़ दिया। फलत: स्त्री की स्थिति सदा नगण्य ही रही। वह स्वतंत्र होने के इरादे से अपना संगठन बनाने को तैयार नहीं हुई। उसने कभी भी स्वयं को स्वतंत्र जाती के रूप में नहीं देखा। वह सब कुछ अपनी नियती मानकर सहती रही।

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद समस्त परिवेश में बदलाव आया। सामाजिक चेतना का विकास समूचे राष्ट्रीय जीवन में परिलक्षित होने लगा था। इसके परिणामस्वरूप परंपरागत दृष्टिकोण बदलने लगे और परंपराओं से पददलित नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण तथा नारी का दृष्टिकोण दोनों बदलने लगे। आज नारी कदम-कदम पर स्वयं को कुशल सिद्ध कर रही है। दरअसल नारी अपनी स्वतंत्र पहचान और महत्ता चाहती है। शिक्षा और आत्मनिर्भरता ने उसे पर्याप्त मात्रा में आत्मविश्वास दिया है। नारी आज प्रत्येक विपरीत स्थितियों का सामना करते हुए अपने अधिकारों केलिए लड़ती है। मुख्यतः आर्थिक स्वतंत्रता ने उसे इस प्रयत्न में आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान की। नारी आज स्वतंत्र चेता व्यक्तिक्व संपन्न शिक्षिता और आत्मनिर्भर हो रही है। किन्तु पुरूष अपने को परंपरागत अवधारणाओं से मुक्त नहीं कर पाया है। वह किसी न किसी रूप में नारी को अपने पर अवलंबित या आश्रित देखना चाहता है। फलत: नारी को अलग-अलग चुनौतियों से जूझना पड़ा है। पुरूष के अन्यायपूर्ण कार्यव्यापारों के विरोध में स्त्री अपना विद्रोही स्वर उठाती है । अस्मिता के बारे में प्रमुख विवेचन नीचे दिये जा रहे है।

"वैदिक काल से लेकर आज तक नारी के लिए बहू प्रचलित शब्द स्त्री है। सुन्दर वह है जिससे हृदय द्रवित होता है। सुन्दर से सुन्दरी बना है। स्त्री को देखने से पुरूष का हृदय आर्द्र एवं चित्त द्रवित होता है। महिला का अर्थ पूजा है। पूज्य होने के कारण स्त्री का महिला नाम पडा। स्त्री वामा भी है क्योंकि वह सौन्दर्य बिखेरती है। वयति सौन्दर्यम। वह वामा इसलिए भी कहलाती है क्योंकि प्रायः नारी प्रतिकूल बात कहती है जैसे हॉ के स्थान पर नहीं। वह कामिनी भी

है क्योंकि वह नर के विमोहन एवं आकर्षण का गहन कुंज है।सुकन्या होकर वह व्यक्ति के सत्यम को प्रकट करती है।नारी होकर नर के सुन्दरम को प्रकाशित करती है तथा माता होकर व्यक्ति के शिवम को रूप देती है"[20]

अरविंद सहज समांतर कोश-शब्दकोश भी थिसारस भी-में 'अस्मिता' शब्द का अर्थ है कि 'आत्मज्ञान, वैयक्तिकता, व्यक्तित्व' आदि।[21] हिन्दी कोश में 'अस्मिता' के लिए अहं अर्थ भी दिया गया है।अहं के अलावा आत्माभिमान, गर्व, घमंड, आत्मसत्ता, अहंकार, मोह जैसे अर्थ किये गये हैं।जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा आचरण से संबन्धित होने से उसकी अस्मिता को द्योतित करता है।

अस्मिता में अस्तित्व बोध प्रधान रहता है। जिसका अस्तित्व होगा उसकी अपनी एक पहचान अवश्य होगी।डॉ. गणेशदास. इस तथ्य को रेखांकित करते हुए लिखते है "जब व्यक्ति परिवेश में अपने अनुरूप जीना चाहता है और वह जी नहीं पाता. तब वह अपने परिवेश में अपने अस्तित्व की तलाश करता है।समाज में मनुष्य का अधिकांश व्यक्तितव दूसरों द्वारा निर्धा रित होता है किन्तु मनुष्य की यह इच्छा रहती है कि वह अपना व्यक्तितव स्वयं निधाइरित करे।उसकी इच्छा के साथ साथ यह प्रश्न भी मन में उठता हे कि हम दूसरों के अनुरूप क्यों जियें।" [22]

दर्शन पाण्डेय ने लिखा है "अस्मिता अर्थात पहचान ।जिसप्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु की अपनी एक अलग पहचान होती है।उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ती की अपनी अलग पहचान तथा अस्मिता होती है।जो उसके व्यक्तिगत रूप को प्रकट करती है।इसी पहचान के कारण व्यक्ति अपने आचार -विचार प्रकट करता है।" [23]

---

20 छायावादी कवियों की नारी भावना :डॉ प्रतिभा गर्ग, पृ. **36**

21 अरविन्द सहज समांतर कोश-शब्दकोश भी थिसारस भी ,पृ. . **106**।

22 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप :डॉ. गणेशदास, पृ. **107**।

23 नारी अस्मिता की परख :दर्शन पाण्डेय ,उपसंहार से,पृ. **78**।

डॉ. मधु सन्धु के डाब्दों में " स्त्रीवादी चिंतन पुरूष के प्रति प्रतिद्वन्द्विता का, दुराग्रहों से मुक्ति और नारी अस्मिता की स्वीकृति से संबन्धित है।"[24]

"नारी अस्मिता का अभिप्राय गुणात्मक विकास से है, न कि प्रतिस्पर्धा के एकांकी दृष्टिकोण से। अत: सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक मूल्यों की व्यापक आचार संहिता को अपनाना होगा। आवश्यक है कि समाज की हर इकाई' नारी' की पुरानी मान्यता को ही स्वीकार न करके उसे न तो हीनतर समझे न उस पर अनावश्यक दवाव डाले।" [25]

"अस्मिता' में अहंता, आत्म-परिज्ञान, स्वभिमान आदि का भाव निहित है। अस्मिता के मूल में आत्मविश्वास निहित है। जब तक व्यक्ति के मन में आत्मविश्वास पैदा नहीं होगा, तब तक वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान न पाएगा।"[26]

चित्रा मुद्गल के अनुसार "दरअसल नारी चेतना की मुहिम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आन्दोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ और अन्य मनुष्यों की ही भांति समाज में सम्मानपूर्वक रहने की अधिकारी हूँ।" [27]

डा. सुधा सिंह की राय में "आधुनिक जनजीवन में नारी सुशिक्षित होकर अपनी अस्मिता और अधिकारों के प्रति जागरूक है। वह परंपरागत चरणोम् की दासी न होकर वर्त मान स्पेस और कम्प्यूटर दौर में बराबर की सहयात्री है।" [28]

---

24 महिला उपन्यासकार **21**वीं शति की पूर्व संध्या के संदर्भ में: डॉ मधु सन्धु, पृ. **8**

25 मधुमती ःफरवरी **,1996,**पृ.**79**

26 आजकल, मार्च **-1990.** पृ. **5**

27 आजकल.चित्रा मुदगल- साहित्य में स्वचेतना और स्त्री **,**मई- **2001** .पृ **.7**

28 अमृतराय का कथा साहित्य ः मध्यवर्गीय जीवन डा. सुधा सिंह पृ **165**।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारतीय नारी आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर हो रही हैं। यहाँ तक कि वह पुरूष के समकक्ष स्थान की अधिकारिणी बन रही है। लेकिन पुरूष प्रधान समाज नारी को तरह-तरह के उपायों से अपने अधीन में रखने केलिए प्रयत्नशील है। फलतः नारी को अनेक प्रकार की अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने केलिए आज की नारियाँ प्रयासरत हैं।